

# जिंदगी जहां शुरू होती है

## बर्फीद ख़त्रा

इस दुनिया में रोटी कमाने के लिए जो काम आमतौर पर किए जाते हैं, वैसा कोई काम भजनी नहीं करता था। पहले-पहले भजनी को देखने वाला सोच सकता था, कि उसकी जिंदगी के कुछ ही दिन शेष बचे हैं। उसका शरीर इतना अशक्त था, कि मुश्किल से वह अपने काम करता। अक्सर उसके हाथ कांपते रहते और कमर झुकी होती। बाल अस्त-व्यस्त रहते और आंखों पर चश्मा चढ़ा होता, जिसे भजनी बार-बार ठीक करके इस तरह देखता, जैसे देखने के लिए उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती हो।

दिन भर भजनी का यही हाल रहता। पर रात की महफ़िल में ढोलक की थाप पड़ते ही, भजनी के मरियल जिस्म में जैसे विजली कौंध जाती। हारमोनियम पर सुर छेड़ते हुए रागों और रागिनियों के आकाश में भजनी यहां से वहां उड़ता रहता। न आसपास की ख़बर होती, न पास-पड़ोस की। तब भजनी को न तो किसी सहारे की ज़रूरत रहती और न ही बार-बार अपना चश्मा ठीक करने का ख़याल आता। उसके गले की नसें सितार के तार की तरह तनी होतीं और उसकी आवाज़ समुंदर की लहरों की तरह उठती-बैठती।

मजाल है महफ़िल में कोई ग़लत सुर लगा दे, भजनी उसके रुंआसा होने तक लताड़ लगाता रहता। फिर आइंदा ग़लती न करने की हिदायत देता और महफ़िल फिर से शुरू हो जाती।

यह गायन-वादन का सिलसिला सुबह तक चलता और उगते सूर्य की रौशनी जैसे भजनी की फिर से सारी ताकत सोख़ लेती। दिन भर अशक्त-सा और चलने से लगभग लाचार भजनी, शाम को मंडली के आते ही जैसे शेर हो जाता।

ख़ूबसूरत तो भजनी किसी सूरत में नहीं था, बल्कि कहना चाहिए कि सुंदर होने के जो पैमाने होते हैं, उसके हिसाब से बहुत कुछ कुरूप था भजनी। पर उसकी यही कुरूपता मानो उसके संगीत में सुंदरता भरती थी। जब संगीत की मस्ती उस पर छा जाती, तो उस समय उसका चेहरा ऐसे दपदपा रहा होता, कि लगता दुनिया में सबसे सुंदर वही है। पैसा भी उसके पास इतना ही होता था कि बस किसी से मांगने की ज़रूरत नहीं होती थी। लेकिन एक संतोष था, एक शांति थी। हां, एक उतावलापन भी था और आवेश भी। वह तब, जब वह गा या बजा रहा होता। एक पागलपन भी था भजनी में, जिसके एक छोर पर उसकी बेटी सुमित्रा खड़ी थी और दूसरे छोर पर उसका संगीत था। शायद उसे खुद से इतना प्यार नहीं था, जितना सुमित्रा और संगीत से।

एक तरह से, उस हवेली और भजनी की स्वामिनी उसकी बेटी ही थी। भजनी ठीक उसी तरह से रहता, जैसे उसकी बेटी चाहती। वही काम करता जो बेटी कहती। बेटी ने जो कहा, सब सच। बेटी ने जो कहा, वही ब्रह्मवाक्य। बस संगीत के मामले में वह कभी-कभार बेटी का कहना भी टाल जाता। लेकिन बाप-बेटी में इतना सामंजस्य था कि सुमित्रा भी संगीत के मामले में कभी भजनी को न टोकती। बल्कि सहयोग ही करती। जितना लगाव भजनी को संगीत से था, उतना ही लगाव बेटी को नृत्य से था। भजनी को बेटी का नृत्य पसंद था और बेटी को पिता का संगीत।

सांझ ढले जब सूरज अपनी गुफ़ाओं में जा रहा होता और धरती पर अंधेरा अपने पैर पसार रहा होता, भजनी के शरीर में जैसे जान आ रही होती। उसकी बेटी के पांव धरती पर थाप देने लगते। महफ़िल जमने से पहले ही अनजाना-सा संगीत हवाओं में बहने लगता और महफ़िल जमने के कुछ समय बाद ही भजनी और उसकी बेटी किसी और ही दुनिया के हो जाते। हो सकता है, आपका मनोविज्ञान भजनी को कुछ विक्षिप्त समझे, पर न जाने क्यों मुझे उसका यह

सुफ़ियाना स्वभाव अच्छा लगता। भजनी का यह पागलपन बार-बार मुझे आकर्षित करता।

भजनी के दादा इस छोटी-सी रियासत के राजा थे और यह रियासत उसके पिता से होती हुई उस तक पहुंची थी। आज़ादी के बाद जब राजे-रजवाड़े ख़त्म कर दिए गए, रामधन ने भी इसे चुपचाप स्वीकार कर लिया। वैसे भी राजा होना रामधन के स्वभाव में नहीं था। मां-बाप की इकलौती संतान थे और बचपन से ही सबके लाड़ले रहे। कुछ ज़मीन थी, जो बटाई पर दी हुई थी और इसी से भजनी का खर्च चलता था। शाम को जब संगीत की महफ़िल जमती, तो चाय-पानी का इंतज़ाम सुमित्रा के ही ज़िम्मे होता। भजनी अपनी बेटी को दीदी कहता और देखा-देखी सुमित्रा मानो सबकी दीदी हो गई थी। भजनी अक्सर चिरौरी करता, दीदी एक कप चाय मिलेगी। अक्सर सुमित्रा चाय ले आती, पर कभी-कभी इनकार भी कर देती। तब कांपते हाथों से भजनी दो कप चाय बनाता, एक कप सुमित्रा को देता और एक कप खुद पीता। शाम के समय जब महफ़िल जमती, सुमित्रा उनींदी आंखें लिए तब तक बैठी रहती, जब तक नींद वेसुध न कर दे। कभी-कभार जब वह खुश होती, वह भजनी के संगीत पर नाचती रहती और तब संगीत की गंभीर बैठक, हंसी-मज़ाक की महफ़िल में बदल जाती। भजनी अपनी भुजाएं फड़का-फड़का कर ढोलक बजाता और सुमित्रा से नाचने के लिए विनय करता। हालांकि सुमित्रा खुद बड़ी मुश्किल से अपने पांव रोक पाती, पर पिता से चिरौरी करने में उसे मज़ा आता। वह जानबूझ कर तब तक खुद को रोके रखती, जब तक भजनी गिड़गिड़ाते न लग जाता। उसके बाद तो महफ़िल में कभी नृत्य और संगीत की विजलियां कौंधती, कभी तूफ़ान की गड़गड़ाहट और कभी नदियों की कल-कल गूंजती।

आस-पास के गांवों में जब भी कोई संगीत की महफ़िल जमती, भजनी उसका मुख्य हिस्सा होता। जहां सुर और ताल का कोई विवाद होता, फ़ैसला भजनी को ही करना पड़ता। भजनी के बाद कहीं अन्याय की गुंजाइश न रहती। किसी को शिकायत न होती। मानो संगीत का उद्भव भजनी ने ही किया हो। दुनियादारी से दूर भजनी का मन करता, तो अपने साजिंदों के साथ किसी उत्सव या बच्चे के मुंडन संस्कार पर भी पहुंच जाता। रात भर महफ़िल वहीं जम जाती। मन न करता तो लाख बुलाने पर भी किसी के यहां न जाता। भजनी की संगीत की महफ़िल का मुख्य स्थान तो उसकी हवेली ही थी।

आमतौर पर भजनी उन सभी कामों से दूर ही रहता था, जो चाहे-अनचाहे आम आदमी को करने होते हैं। लेकिन एक काम तो भजनी को करना ही था। वह था, अपनी बेटी सुमित्रा की शादी। हालांकि भजनी का बस चलता, तो कभी बेटी को खुद से दूर न करता। भजनी जब भी शादी के बारे में बात करता, सुमित्रा नाराज़ हो कर कहती, "ख़बरदार आपने मेरी शादी के बारे में बात भी की तो! मेरे बाद आपकी देखभाल कौन करेगा!"

पर यह भी संभव नहीं कि सुमित्रा आजीवन इसलिए शादी न करे, कि भजनी की देखभाल के लिए कोई दूसरा नहीं है।

सो भजनी बेटी की शादी के लिए चिंतित था। हालांकि भजनी में बेटी के लिए दुल्हा तलाशने जैसे दुनियादारी के काम की कोई योग्यता नहीं थी। न ही उसे मालूम था, कि आज के हिसाब से लड़के में क्या गुण देखे जाने चाहिए, ताकि वह उसकी बेटी का ख्याल रख सके। शायद यह भजनी के लिए दुनिया का सबसे कठिन काम था। न तो भजनी आजकल के तथाकथित अमीर और कमाऊ लड़कों को पसंद करता था, जो पत्नी को दासी समझते हैं, न ही उन नकारा लड़कों को, जो काम-धाम कुछ करते नहीं, बस डींगें हांका करते हैं। भला अपनी रोटी जितना तो कमाना ही चाहिए। फिर भजनी का वास्ता तो संगीत से था। सो लड़का ऐसा भी होना चाहिए, जिसे संगीत की कुछ थोड़ी-बहुत तो तमीज़ हो। अब भला जो संगीत में वेसुरा हो, उसके साथ सुरिली जिंदगी की कल्पना कैसे की जा सकती है! इतनी दूर भी न हो कि भजनी अपनी बेटी से मिलने का मोहताज हो जाए।

अब इन सब शर्तों का पालन करने वाले लड़के का मिलना कोई आसान काम तो था नहीं। सो एक तरफ़ जहां भजनी की चिंता बढ़ती जा रही थी, वहीं दूसरी तरफ़ वह यह भी सोच रहा था, कि अगर एक-आध गुण न भी मिले तो कोई

बात नहीं, वह समझौता कर लेगा। लेकिन ठीक-सा लड़का मिले तो सही! इधर सुमित्रा से जब भी इस मामले पर बात करता, उसकी एक ही तोता रटत होती, "मेरे बाद आप का ख्याल कौन रखेगा?"

भजनी का बस चलता तो अपने किसी साजिंदे से ब्याह देता सुमित्रा को। पर दुनिया का दस्तूर ऐसा कहां है। लोग क्या कहेंगे। रियासत न रही तो क्या हुआ, नाम के साथ राजा तो आज भी जुड़ा है। कई बार भजनी सोचता कि काश! उसके नाम के साथ यह नाममात्र की रियासत न जुड़ी होती तो किसी तरह के आडंबर की ज़रूरत न रहती। कहीं भी एक भला-सा लड़का देखता और उससे सुमित्रा को ब्याह देता। यह बड़े नाम का ही प्रताप है, कि कोई भला-सा लड़का उसकी बेटी का हाथ मांगने की हिम्मत नहीं करता।

फिर पता नहीं दामाद कैसा हो! कहीं वह सुमित्रा के नाचने, गाने और हंसने पर ही पहरे न लगा दे! बहुत हैं ऐसे आदमी, जो खुद चाहे जहां गुलछरें उड़ाते रहें, पर पत्नी को सात पर्दों के पीछे रखना चाहते हैं। हो सकता है, भजनी के पास भेजने में भी आनाकानी करते रहें। इस तरह तो उसका बेटी से मिले बिना जीवित रहना ही कठिन हो जाएगा।

दूसरे, भजनी को विवाह से पहले लड़की देखने आने वाले लड़के के परिवार की हरकतों का भी कुछ आभास था। भजनी को पता था कि लड़के वाले, लड़की देखने के नाम पर कैसी-कैसी बेहूदा हरकतें करते हैं। मानों विवाह न कर रहे हों, कोई माल खरीद रहे हों। एक भरी-पूरी स्त्री को दासी की शक्ल में देखा जाता है। उसके कौशल की परीक्षा ली जाती है। जैसे कोई नौकर रख रहे हों। नख-शिख देखेंगे, कहीं कोई कमी तो नहीं। बाल लंबे हैं या छोटे। चाल कैसी है, लंगड़ाती तो नहीं, आंखें ठीक हैं या भेंगी हैं। खाना कैसा बनाती है, सीना-पिरोना जानती है या नहीं! चाहे खुद बंदर जैसे दिखते हों, दुल्हन के रूप में हूर ही चाहिए। यही सब बातें थीं, जो भजनी की सहनशक्ति से बाहर थीं।

इन्हीं दिनों भजनी से मिलने उसका पुराना शिष्य सारंग आया। सारंग हालांकि भजनी के गांव का नहीं था, पर एक दोस्त के कहने पर भजनी ने कुछ समय अपने साथ रख कर संगीत सिखाया था। सारंग बहुत ज़्यादा होशियार छात्र तो नहीं था, पर धीरे-धीरे उसने संगीत की तमाम बारीकियां सीख लीं थीं। संगीत सीखने के दौरान वह भजनी के यहां रहा। परंपरा में जैसा गुरु का मान किया जाता है, वह वेसा ही मान भजनी का करता था। बाद में उसने शहर में संगीत विद्यालय खोल लिया था। हालांकि सारंग के आते ही एक बार भजनी के मन ख्याल आया था कि वह उससे सुमित्रा के बारे में बात करे, लेकिन दो दिन यों ही निकल गए और भजनी उससे इधर-उधर की बात ही कर पाया।

सारंग से बातचीत से पता चला कि उसका स्कूल ठीक से चल रहा है, हालांकि धनवर्षा उस पर नहीं हो रही, पर गुज़ारा अच्छे से हो रहा है। भजनी ने यह भी महसूस किया कि सुमित्रा के सामने पड़ने पर सारंग कुछ हकबका जाता है। लेकिन भजनी भी संकोच करता रहा और अंततः तीसरे दिन सारंग ने जाने की इज़ाज़त मांगी।

भजनी सोच ही रहा था कि सारंग से सुमित्रा के बारे में बात करे या न करे, तभी सारंग ने हिचकिचाते हुए कहा, "हालांकि अपने गुरु से मुझे यह बात करते हुए संकोच भी हो रहा है, पर क्या करूं कहना तो पड़ेगा ही। जब मैं यहां संगीत सीख रहा था, तभी से सुमित्रा को चाहता हूं और उससे शादी करना चाहता हूं!"

भजनी के तो जैसे मन की बात कह दी थी सारंग ने। इससे पहले कि भजनी पूछता, खुद सारंग ने ही बता दिया कि चाहे वह ज़्यादा अमीर नहीं है, लेकिन वह सुमित्रा को ठीक उसी तरह खुश रखेगा, जैसे वह भजनी के यहां रह रही है। न तो वह स्त्री को दासी बनाने में यकीन रखता है और न ही उसकी स्वतंत्रता खंडित करने में। सुमित्रा जब भी चाहेगी, वे भजनी से मिलने आते रहेंगे।

शायद भजनी को यही सब चाहिए था। आंसू भरी आंखों से उसने एक बार सारंग को देखा और फिर पीछे हवेली के मुख्यद्वार पर खड़ी सुमित्रा को। भजनी का सवालिया चेहरा देख, सुमित्रा झट से शरमा कर अंदर भाग गई। सुमित्रा के

इस तरह भागने से भजनी को उसका जवाब मिल गया था। भजनी ने सारंग को इस शादी के लिए हां कह दी।

शादी दिन की रखी गई थी। चार-पांच बजते-बजते, सुमित्रा डोली में बैठ अपने सुसुराल विदा हो गई। आज पहला मौका था जब भजनी घर पर अकेला था। जैसे ही शाम ढली और रात का पहला प्रहर शुरू हुआ, भजनी के महफ़िल के साथी इकट्ठे होने शुरू हो गए थे। महफ़िल शुरू हुई। पर आज चाय पूछने और नृत्य के लिए सुमित्रा नहीं थी। कुछ ही देर बाद भजनी, जो दूसरों के वेसुरा होने पर चिल्लाता था, आश्चर्य की बात थी कि खुद ही वेसुरा होने लगा था। उसे समझ भी आ रहा था कि वह वेसुरा हो रहा है। अंततः न जाने क्या हुआ कि भजनी फफक-फफक कर रोने लगा। महफ़िल में शरीक सभी लोग जान सकते थे, कि आज भजनी की हालत ठीक नहीं है। लेकिन क्या किया जा सकता था! एक-न-एक दिन सुमित्रा की शादी होनी ही थी। एक-न-एक दिन तो उसे अपने सुसुराल जाना ही था। लेकिन भजनी भी अब कैसे जिएगा, जिस बेटी ने अब तक उसका ख्याल रखा, बल्कि जीवित रखा, अब वह यहां नहीं है। कभी आएगी भी, तो एकाध दिन के लिए। इस मौके पर दूसरों को समझाने के लिए जो भाषा बनी है, उस भाषा में भजनी को समझाया नहीं जा सकता था। साधारण भाषा और साधारण शब्द! घिसे-पिटे और बार-बार दोहराए गए शब्द। वे शब्द भला भजनी को सांत्वना कैसे दे सकते हैं! भजनी के साथी भी यह बात जानते थे। भजनी की समझदारी उनसे कुछ कम नहीं थी, कि उसे समझाना पड़े। फिर समझने से भी क्या होगा। बेटी से विछुड़ने की पीड़ा सहने की तो भजनी को धीरे-धीरे आदत पड़ेगी। हालांकि सुमित्रा की सुसुराल कुछ ज़्यादा दूर भी नहीं थी। पर आज शादी का दिन और सुहागरात। यह संभव ही नहीं था, कि भजनी इन क्षणों में अपनी बेटी से मिल पाता।

भजनी के साथी अभी यह सोच ही रहे थे, कि हवेली के बाहर कोई वाहन आकर रुका। छम-छम पायल बजाती सुमित्रा आगे-आगे और सारंग पीछे-पीछे, लगभग भागते हुए, हवेली की सीढ़ियां चढ़ते हुए, वहां तक पहुंचे जहां वे सब बैठे हुए थे। एक क्षण के लिए वहां बैठे सब लोग अचंभित रह गए। लेकिन अगले ही क्षण जब खिलखिलाती हुई सुमित्रा आकर भजनी के गले से लिपट गई, तो सबने राहत की सांस ली। तब सारंग ने बताया कि शाम से ही सुमित्रा उदास थी। सारंग को पता था कि सुमित्रा को भजनी की चिंता सता रही होगी। दूसरी तरफ़ यह शादी की पहली रात थी। सो सारंग ने निश्चय किया कि वह अपनी सुहागरात ख़ास तरीके से मनाएंगे। वह ख़ास तरीका यह होगा कि वह सुमित्रा की वह इच्छा पूरी करेगा, जिसके बारे में वह सारंग को बता नहीं पा रही।

थोड़ी ही देर में महफ़िल फिर शुरू हो गई। दुल्हन के लिवास में ही सुमित्रा ने खूब नृत्य किया। एक तरफ़ जहां भजनी अपनी भुजाएं फड़का-फड़का कर ढोलक बजा रहा था, वहीं दूसरी तरफ़ सारंग ने हारमोनियम संभाल लिया था। सारंग जब भी सुरों से भटकता, भजनी उसे ठीक उसी तरह डांट भी रहा था, जैसे किसी छात्र को डांटते हैं और सारंग भी अपनी ग़लती उसी तरह सुधार रहा था, जैसे कोई छात्र सुधारता है। पता नहीं क्यों सारंग संगीत का मास्टर होते हुए भी ग़लतियां करता रहा और भजनी भी सुधारता रहा। सुबह के चार बज चुके थे। भजनी ने भीगी आंखों से सारंग और सुमित्रा को विदा किया। आज भजनी को यकीन हो गया था, कि सुमित्रा के लिए सारंग का उसका चुनाव ग़लत नहीं था।

9 जुलाई 2006